3. एच.आई.वी.एड्स (AIDS)

मूल लेखकः डॉ.प्रकाश भातल बंडे
डॉ.रमण गंगा खड़ेकर
अनुवादः श्रीमती साधना मौर्य

हिन्दी में वैज्ञानिक लेखन की कमी है। वैज्ञानिक खोजों, तकनीकी से संबंधित अधिकांश विषय प्रायः अंग्रेज़ी, में प्रकाशित होंते हैं। बाद में उनका हिन्दी अनुवाद किया जाता है। एच.आई.वी / एड्स के संबंध में भी यही हुआ है। यह बीसवीं सदी की सबसे भयंकर बीमारी रही है। इससे संबंधित शोधकार्य भी पहले अंग्रेज़ी में हुए हैं। प्रस्तुत पुस्तकांश के लेखकों ने भी मूल पुस्तक को अंग्रेज़ी में लिखा है । वे लेखक है डॉ.प्रकाश भातल बंडे और डॉ. रमण गंगा खड़ेकर। दोनों 'यूनिसेफ' की परियोजना में काम करनेवाले रहे हैं। 'युनसेफ' की परियोजना के तहत उन्होंने पहले अंग्रेज़ी में पुस्तक लिखी है। उनके अनुसार यह एड्स संक्रमणिक बीमारी के संदर्भ में पहला प्रयास था। 'युनिसेफ' की मुंबई शाखा के सहयोग से यह संपन्न हुआ।

लेखिका श्रीमती साधना मौर्य ने अंग्रेज़ी पुस्तक का 'यौवन की दहलीज पर' शीर्षक से हिन्दी में अनुवाद प्रस्तुत किया है। श्रीमती साधना मौर्य लोकप्रिय अनुवादिका है। अंग्रेज़ी से हिन्दी और अंग्रेज़ी से मराठी में अनुवाद करने का विशेष अनुभव उनको प्राप्त है। इन्होंने स्नातक स्तर की शिक्षा विज्ञान से प्राप्त की। बाद में एम.ए (अर्थसास्त्र) तथा (प्रयोजनमूलक हिन्दी) पूरा किया। हिन्दी अधिकारी व अनुवादक के पद पर फिलहाल कार्यरत हैं।

प्रस्तुत लेख 'एच.आय.वी/एड्स' एक वैज्ञानिक निबंध है। 'एच.आय.वी/एड्स' बीसवीं सदी की लाईलाज बीमारी है। यह बीमारी भारत में भी विशेष तेजी से फैल रही है। लाइलाज होने के कारण इस की जानकारी लेना ही सबसे बड़ा इलाज है। इस आशय से स्नातकों को यह पाठ पढ़ाया जा रहा है। इस में मुख्यतः एच.आय. वी/एड्स का इतिहास, भारत में इसका आगमन और फैलाव, इस बीमारी के होने पर होने वाले लक्षण, इस विषाणु का संक्रमण कैसे होता है, इस बीमारी के प्रति फैली भ्रम / भ्रांतियों का परिचय आदि मुद्दे चर्चित है। सरल भाषा में लिखा गया यह लेख सुबोधगाम्य है।

एच.आई.वी/एड्स : इतिहास

सन् / 1981 में, अमेरिका के लॉस एंजिल्स शहर के रोगियों में, डॉक्टरों को कुछ विशिष्ट लक्षण दिखाई दिए। वहाँ पर समलैंगिक संभोग करने वाले कुछ युवा लोगों में एक विशिष्ट प्रकार का न्यूमोनिया (न्यूमोसिरिटस केरिनाय न्यूमोनिया) और त्वचा का कर्करोग या कैंसर (कॅपोसीज़ सारकोमा) देख गया। आमतौर पर यह रोग उन लोगों में पाया जाता था, जिनमें शरीर की रोग प्रतिकार शक्ति कम थी या जो लोग बूढ़े थे। वैज्ञानिकों के शरीर की नैसर्गिक रोग प्रतिरोधक क्षमता को कम करने वाले कोई भी कारण नहीं मिले। यह अनुमान लगाय गया कि शायद यह समलैंगिक व्यवहार के कारण हुआ हो। इस रोग को गे-रिलेटेड इन्युनोडेफीशिएन्सी सिन्ड्रोम (Gay-related immunodeficiency syndrome या (GRID) नाम दिया गया। कुछ समय के बाद वैसे ही लक्षण विषमलैंगिक संभोग करनेवाले, शिराओं से मादक द्रवों का सेवन करने वाले और हीमोफीलिक (जिन्हें आनुवंशिक रक्तदोश के कारण बार-बार रक्त देना पड़ता है।) लोगों में भी

दिखाई दिए। ये लोग समलैंगिक संबंध रखने वाले नहीं थे। तब वैज्ञानिकों ने सोचा कि यह रोग प्रतिकारक शक्ति कम करने वाले किसी विषाणु से होता होगा और इस तरह इसका नाम बदलकर एकवाइयर्ड इन्युनोडेफीशिएन्सी सिन्ड्रोम (Acquired Immunodeficiency Syndrome - AIDS) रखा गया।

सन् 1983 में फ्रॉस के प्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ.ल्यूक मॉन्टाग्नियर ने इस रोग के विषाणु की खोज की। उसी समय अमेरिका के डॉ.रॉबर्ट गेलो कोभी यही विषाणु दिखाई दिया। शुरुआत में इस विषाणु को अलग-अलग वैज्ञानिकों ने अलग-अलग नाम दिए। लेकिन बाद में इसे 'ह्यूमन इम्युनो डेफाशियन्सी वायरस (एच.आय.वी.) नाम दिया गया, जिसका अर्थ है, मानव शरीर की रोग प्रतिकारक शक्ति कम करने वाला विषाणु। एच.आय.वी.पर नियंत्रण के लिए गुप्तरोगों पर नियंत्रण करना जरुरी है। इन दोनों रोगों के लिए समाज में नियमित और आवश्यक रूप से जागरुकता अभियान चलाने की आवश्यकता है। साथ ही देश के राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रम में एड्स को उच्च प्राथमिकता देने की भी आवश्यकता है।

भारत में पहली बार एच.आय.वी. संक्रमण कब देखा गया और अब तक यह कितना फैल चुका है?

अप्रैल 1986 में सर्वप्रथम मद्रास की कुछ वेश्याओं में यह रोग पाया गया। दुर्मा दोगन मुम्बई में एड्स का पहला भारतीय रोगी मिला। यह व्यक्ति हृदय रोग की शस्त्रक्रिया के लिए विदेश गया था। शस्त्र चिकित्सा के समय उसे जो रक्त दिया गया था, वह दुर्भाग्यवश एच.आय.वी.संक्रमित था, जिससे उसे एड्स हो गया था।

प्रस्तुत लेख 'एच.आय.वी/एड्स' एक वैज्ञानिक निबंध है। 'एच.आय.वी/एड्स' बीसवीं सदी की लाईलाज बीमारी है। यह बीमारी भारत में भी विशेष तेजी से फैल रही है। लाइलाज होने के कारण इस की जानकारी लेना ही सबसे बड़ा इलाज है। इस आशय से स्नातकों को यह पाठ पढ़ाया जा रहा है। इस में मुख्यतः एच.आय. वी/एड्स का इतिहास, भारत में इसका आगमन और फैलाव, इस बीमारी के होने पर होने वाले लक्षण, इस विषाणु का संक्रमण कैसे होता है, इस बीमारी के प्रति फैली भ्रम / भ्रांतियों का परिचय आदि मुद्दे चर्चित है। सरल भाषा में लिखा गया यह लेख सुबोधगाम्य है।

एच.आई.वी/एड्स : इतिहास

सन् / 1981 में, अमेरिका के लॉस एंजिल्स शहर के रोगियों में, डॉक्टरों को कुछ विशिष्ट लक्षण दिखाई दिए। वहाँ पर समलैंगिक संभोग करने वाले कुछ युवा लोगों में एक विशिष्ट प्रकार का न्यूमोनिया (न्यूमोसिस्टिस केरिनाय न्यूमोनिया) और त्वचा का कर्करोग या कैंसर (कॅपोसीज़ सारकोमा) देख गया। आमतौर पर यह रोग उन लोगों में पाया जाता था, जिनमें शरीर की रोग प्रतिकार शक्ति कम थी या जो लोग बूढ़े थे। वैज्ञानिकों के शरीर की नैसर्गिक रोग प्रतिरोधक क्षमता को कम करने वाले कोई भी कारण नहीं मिले। यह अनुमान लगाय गया कि शायद यह समलैंगिक व्यवहार के कारण हुआ हो। इस रोग को गे-रिलेटेड इन्युनोडेफीशिएन्सी सिन्ड्रोम (Gay-related immunodeficiency syndrome या (GRID) नाम दिया गया। कुछ समय के बाद वैसे ही लक्षण विषमलैंगिक संभोग करनेवाले, शिराओं से मादक द्रवों का सेवन करने वाले और हीमोफीलिक (जिन्हें आनुवंशिक रक्तदोश के कारण बार-बार रक्त देना पड़ता है।) लोगों में भी

दिखाई दिए। ये लोग समलैंगिक संबंध रखने वाले नहीं थे। तब वैज्ञानिकों ने सोचा कि यह रोग प्रतिकारक शक्ति कम करने वाले किसी विषाणु से होता होगा और इस तरह इसका नाम बदलकर एकवाइयर्ड इन्युनोडेफीशिएन्सी सिन्ड्रोम (Acquired Immunodeficiency Syndrome - AIDS) रखा गया।

सन् 1983 में फ्रॉंस के प्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ.ल्यूक मॉन्टाग्रियर ने इस रोग के विषाणु की खोज की। उसी समय अमेरिका के डॉ.रॉबर्ट गेलो कोभी यही विषाणु दिखाई दिया। शुरुआत में इस विषाणु को अलग-अलग वैज्ञानिकों ने अलग-अलग नाम दिए। लेकिन बाद में इसे 'ह्यूमन इम्युनो डेफाशियन्सी वायरस (एच.आय.वी.) नाम दिया गया, जिसका अर्थ है, मानव शरीर की रोग प्रतिकारक शक्ति कम करने वाला विषाणु। एच.आय.वी.पर नियंत्रण के लिए गुप्तरोगों पर नियंत्रण करना जरुरी है। इन दोनों रोगों के लिए समाज में नियमित और आवश्यक रूप से जागरुकता अभियान चलाने की आवश्यकता है। साथ ही देश के राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रम में एड्स को उच्च प्राथमिकता देने की भी आवश्यकता है।

भारत में पहली बार एच.आय.वी. संक्रमण कब देखा गया और अब तक यह कितना फैल चुका है?

अप्रैल 1986 में सर्वप्रथम मद्रास की कुछ वेश्याओं में यह रोग पाया गया। दुर्मा दोगन मुम्बई में एड्स का पहला भारतीय रोगी मिला। यह व्यक्ति हृदय रोग की शस्त्रक्रिया के लिए विदेश गया था। शस्त्र चिकित्सा के समय उसे जो रक्त दिया गया था, वह दुर्भाग्यवश एच.आय.वी.संक्रमित था, जिससे उसे एड्स हो गया था।

राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण संस्था (NACO) के 2000 के आंकड़ों के अनुसार भारत के करीब 38 लाख लोग एच.आय.वी रोग से ग्रासित है। माहराष्ट्र के लगभग सभी जिलों में एच.आय.वी.संक्रमित रोगियों की रिपोर्ट आयी हैं।

एच.आय.वी. मुख्यतया सेक्स से फैलने वाला एक रोग है। इसलिए कुछ गुप्तरोगों की तरह ही यह महामारी भी तीन अवस्थाओं से गुजरती है। इस महामारी की प्राथमिक अवस्था में यह रोग वेयाओं में दिखाई देता है। दूसरी अवस्था में इन वेश्याओं के ग्राहकों में एच.आय.वी.के लक्षण दिखाई देते हैं व तीसरी अवस्था में वेश्याओं के ग्राहकों की पत्नी और बच्चे भी इस रोग से ग्रस्त हो जाते हैं। ऐसा लगता है कि पश्चिम भारत के अधिकतर प्रमुख शहरों में यह रोग अपनी तीसरी अवस्था तक पहुँच चुका है।

एड्स के लक्षण व चिन्ह

एच.आय.वी और एड्स में क्या अंतर ह ?

एच.आय.वी.का अर्थ है, ह्यूमन इम्यूनो-डिफीशियन्सी वायरस। यह एड़स के लिए जिम्मेदार विषाणु का नाम है। एड्स, 'अकवायेर्ड इम्युनो डिफीशियन्सी सिड्रोम' का संक्षिप्त रूप है। ये विषाणु मनुष्य के शरीर में प्रवेश करने के बाद सीधे सफेद सक्त कोशिकाओं पर हमला कर देते हैं सफेद रक त कोशिकाएँ अपने शरीर की सुरक्षा प्रक्रियाओं का समन्वित करती है तथा शरीर का विभिन्न संक्रमणों, जैसे विषाणु, बैक्टेरिया और फंगस (कवक) आदि से संरक्षण करती है।

शरीर में प्रवेश के बाद विषाणु चुपचाप पुनरुत्पादन का कार्य करते रहते है। एच.आय.वी. के संक्रमण के बाद आरम्भिक अवस्था में, शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता, इस विषाणु से लड़ती रहती है। इसलिए करीब 11 वर्ष तक एड्स के कोई भी लक्षण दिखाई नहीं देते हैं। लेकिन ऐसे व्यक्ति में रोग फैलाने की क्षमता होती है। इस अवस्था को 'संक्रामक अवधि' या एच.आय.वी.रोग की प्रारंभिक अवस्था कहते हैं।

विषाणु के कारण धीरे-धीरे सीडी 4 लिम्फोसाइ्ट की संख्या कम होती जाती है। कुछ समय के बाद ये बहुत ही कम हो जाती है। यह समय अलग-अलग लोगों में अलग-अलग हो सकता है। जब सीडी - 4 की संख्या 200 कोशिका प्रति घनमीटर के नीचे पहुँच जाती है, तब रोग के लक्षण दिखाई देना शुरू हो जाते है। सीडी 4 कोशिकाओं की कमी के कारण व्यक्ति किसी भी संक्रमण, विषाणु, बैक्टेरिया या कवक की चपेट में आसानी से आ जाता है। क्षयरोग के कीटाणु, यदि शरीर में सुप्त अवस्था में होते हैं, तो वे भी शरीर की प्रतिरोधक शक्ति कम होने पर हो जाता है, उसे 'अवसरवादी संक्रमण' कहते है। इस तरह कम प्रतिरोधक शक्ति वाले लोग, इन जीवनणुओं के शिकार हो जाते हैं।

जब एच.आय.वी. के कारण कुछ विशेष लक्षण उत्पन्न होने लगते हैं, तब वह अवस्था एड्स कहलाती है। आमतौर पर रोगी लगभग दो साल के भीतर 'अवसरवादी संक्रमण' से ग्रसित हो जाते हैं।

यह जरूरी है कि लक्षण-रहित अवस्था में एड्स शब्द का प्रयोग प्राणनाशक रूप में, नहीं करना चाहिए, क्योंकि इससे रोगी को यह लगता है कि वह कुछ ही वर्षो में मरने वाला है ।

एड्स के बाह्य लक्षण क्या हैं ?

एड्स के लिए डॉक्टर के द्वारा परीक्षण किया जाना आवश्यक है।

राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण संस्था (NACO) के 2000 के आंकड़ों के अनुसार भारत के करीब 38 लाख लोग एच.आय.वी रोग से ग्रासित है। माहराष्ट्र के लगभग सभी जिलों में एच.आय.वी.संक्रमित रोगियों की रिपोर्ट आयी हैं।

एच.आय.वी. मुख्यतया सेक्स से फैलने वाला एक रोग है। इसलिए कुछ गुप्तरोगों की तरह ही यह महामारी भी तीन अवस्थाओं से गुजरती है। इस महामारी की प्राथमिक अवस्था में यह रोग वेयाओं में दिखाई देता है। दूसरी अवस्था में इन वेश्याओं के ग्राहकों में एच.आय.वी.के लक्षण दिखाई देते हैं व तीसरी अवस्था में वेश्याओं के ग्राहकों की पत्नी और बच्चे भी इस रोग से ग्रस्त हो जाते हैं। ऐसा लगता है कि पश्चिम भारत के अधिकतर प्रमुख शहरों में यह रोग अपनी तीसरी अवस्था तक पहुँच चुका है।

एड्स के लक्षण व चिन्ह

एच.आय.वी और एड्स में क्या अंतर ह ?

एच.आय.वी.का अर्थ है, ह्यूमन इम्यूनो-डिफीशियन्सी वायरस। यह एड्स के लिए जिम्मेदार विषाणु का नाम है। एड्स, 'अकवायेर्ड इम्युनो डिफीशियन्सी सिड्रोम' का संक्षिप्त रूप है। ये विषाणु मनुष्य के शरीर में प्रवेश करने के बाद सीधे सफेद रक्त कोशिकाओं पर हमला कर देते हैं। सफेद रक्त कोशिकाएँ अपने शरीर की सुरक्षा प्रक्रियाओं का समन्वित करती है तथा शरीर का विभिन्न संक्रमणों, जैसे विषाणु, बैक्टेरिया और फंगस (कवक) आदि से संरक्षण करती है।

शरीर में प्रवेश के बाद विषाणु चुपचाप पुनरुत्पादन का कार्य करते रहते है। एच.आय.वी. के संक्रमण के बाद आरम्भिक अवस्था में, शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता, इस विषाणु से लड़ती रहती है। इसलिए करीब 11 वर्ष तक एड्स के कोई भी लक्षण दिखाई नहीं देते हैं। लेकिन ऐसे व्यक्ति में रोग फैलाने की क्षमता होती है। इस अवस्था को 'संक्रामक अवधि' या एच.आय.वी.रोग की प्रारंभिक अवस्था कहते हैं।

विषाणु के कारण धीरे-धीरे सीडी 4 लिम्फोसाइट की संख्या कम होती जाती है। कुछ समय के बाद ये बहुत ही कम हो जाती है। यह समय अलग-अलग लोगों में अलग-अलग हो सकता है। जब सीडी - 4 की संख्या 200 कोशिका प्रति घनमीटर के नीचे पहुँच जाती है, तब रोग के लक्षण दिखाई देना शुरू हो जाते है। सीडी 4 कोशिकाओं की कमी के कारण व्यक्ति किसी भी संक्रमण, विषाणु, बैक्टेरिया या कवक की चपेट में आसानी से आ जाता है। क्षयरोग के कीटाणु, यदि शरीर में सुप्त अवस्था में होते हैं, तो वे भी शरीर की प्रतिरोधक शक्ति कम होने पर हो जाता है, उसे 'अवसरवादी संक्रमण' कहते है। इस तरह कम प्रतिरोधक शक्ति वाले लोग, इन जीवनणुओं के शिकार हो जाते हैं।

जब एच.आय.वी. के कारण कुछ विशेष लक्षण उत्पन्न होने लगते हैं, तब वह अवस्था एड्स कहलाती है। आमतौर पर रोगी लगभग दो साल के भीतर 'अवसरवादी संक्रमण' से ग्रसित हो जाते हैं।

यह जरूरी है कि लक्षण-रहित अवस्था में एड्स शब्द का प्रयोग प्राणनाशक रूप में, नहीं करना चाहिए, क्योंकि इससे रोगी को यह लगता है कि वह कुछ ही वर्षो में मरने वाला है ।

एड्स के बाह्य लक्षण क्या हैं ?

एड्स के लिए डॉक्टर के दवारा परीक्षण किया जाना आवश्यक है।

रोगी को खुद ही लक्षणों को देखकर यह नहीं समझना चाहिए कि उसे एड्स रोग हो गया है, क्योंकि कई बार ऐसा भी हो सकता है कि कोई दूसरी ही बीमारी हो। एड्स के कुछ लक्षण इस प्रकार है -

1. बिना वजह ही अचानक वजन का कम हो जाना, मूल वजन का 10 प्रतिशत तक वजन कम होन, हर माह 5 किलो से ज्यादा वजन कम होना, और यह सब बिना किसी उचित कारण के, जैसे कम अहार लेना, अधिक तनाव या अन्य बीमारियाँ, जिनकी वजह से भूख कम लगती है।
2. एक महीने से ज्यादा तक जुलाब का होना।
3. एक महीने से ज्यादा तक बुखार और खाँसी का चलना।
4. बुरशी नामक कवक के संक्रमण (कैन्डीडिएसिस) से मुँह में व्रण छालों के निर्माण होने से गर्म व मसालेदार भोजन खाने में तकलीफ होना।
5. त्वचा का कर्करोग (कैंसर) और हरपीस का सक्रमण होना।

उपरिलिखित लक्षणों की उपस्थिति में और यदि व्यक्ति का पूर्व - इतिहास जोखिम भरे व्यवहार का रहा है, तो ऐसी स्थिति में डॉक्टर के पास जाकर रोग का निदान आवश्यक है। परंतु ऐसे समय में एड्स रोग हो ही गया है, ऐसा समझ कर घबरा जाने की ज़रूरत नहीं है। यह स्थिति 'एड्स फोबिया' भी कहलाती है।

एच.आय.वी. विषाणु का संक्रमण - ये विषाणु शरीर में कहाँ रहते हैं ?

मनुष्य के शरीर में ये विषाणु सफेद रक्त कोशिकाओं (सी.डी. - 8 लिम्फोसोईट्स) और कुछ मज्जा कोशिकाओं में रहते हैं । इन कोशिकाओं में प्रवेश का एक निश्चित स्थान होता है (सफेद रक्त कोशिकाओं के अंदर जाने का दरवाजा), जिसे सी.डी. - 4 रेसेप्टर कहा जाता है । ये रेसेप्टरी, विषाणु को आकर्षित करते हैं और इस तरह एच.आय.वी. विषाणु के शरीर में प्रवेश करने में सहायक होते हैं। सी.डी. 4 रेसेप्टर, शरीर की बहुत-सी कोशिकाओं में पाया जाता है। एच.आय.वी. विषाणु इन कोशिकाओं में प्रवेश करके, दूसरी संवेदनशील कोशिकाओं को भी संक्रामित कर देता है। एच.आय.वी. विषाणु सी.डी. 4 लिम्फोसाइट्स और कुछ मज्जा कोशिकाओं की ओर ही अधिक आकर्षित होता है, इसलिए इसकी उपस्थिति करीब-करीब सभी अंगों में और स्त्रावों में देखी जा सकती है। यद्यपि इसकी मात्रा, रक्त, वीर्य और योनि के स्त्राव की उपेक्षा, अन्य शारीरिक स्त्रावों में बहुत कम होती है। रक्त और योनि व जननांगों के स्त्रावों की तुलना में, वीर्य में इन विषाणुओं की मात्रा 50 गुना ज्यादा होती है। इस कारण एच.आय.वी. संक्रमित व्यक्ति के रक्त, वीर्य या योनि स्त्राव के लेन-देन से एच.आय.वी. फैलता है। शरीर के अन्य स्त्रावों में, विषाणुओं का प्रमाण बहुत कम होता है। इसलिए शरीर के अन्य स्त्रावों से इस विषाणु के प्रसार की संभावना बहुत कम ही होती है।

इस विषाणु का संक्रमण किस तरह से होता है ?

एच.आय.वी. के विषाणु वीर्य, योनि व जननांगों के स्त्रावों और रक्त में पर्याप्त मात्रा में पाये जाते है। यदि एच.आय.वी. संक्रमित व्यक्ति का

रक्त, वीर्य या योनिस्राव, स्वस्थ व्यक्ति के शरीर में प्रवेश करता है, तो इ तरह वह भी एच.आय.वी. संक्रमण से ग्रस्त हो जाता है । संभोग में वी और योनिस्राव दोनों का आदान-प्रदान होता है, यदि एच.आय.वी. संक्रमि व्यक्ति से बिना कंडोम का उपयोग किये हुए संभोग किया गया, तो इ विषाणु दूसरे व्यक्ति के शरीर में प्रवेश करने की पूरी संभावना रहती । बाधित व्यक्ति का रक्त, स्वस्थ व्यक्ति को देने से भी एच.आय.वी. फैलत है ।

एच.आय.वी. ग्रसित व्यक्ति को इंजेक्शन देने के लिए जिस सुई क उपयोग किया गया था, उसी सुई को बिना जीवाणु रहित किए अन्य स्वस्थ व्यक्ति को इंजेक्शन देने से भी संक्रमण की संभावना रहती है । संक्रमण ग्रसित गर्भवती माता से यह संक्रमण बच्चे को भी हो जाता है। शिराओं मादक द्रव्यों का सेवन करने वाले व्यक्तियों में एक ही सुई का उपयोग ज अनेक लोग करते है, तव उससे भी एच.आय.वी. फैलने की संभावना ब जाती है ।

एच.आय.वी. फैलने के अनेक मार्गों में संभोग का माध्यम ही सबसे सुगम व महत्वपूर्ण है । रक्त देना या इंजेक्शन लेना तो जीवन में कभी-कभी ही होता है । जब कि सेक्स क्रियाओं के होने के अवसर बहुत अधिक होते है । अन्य गुप्तरोगों से जननेन्द्रियों पर होने वाले व्रण से इस विषाणु क शरीर में प्रवेश आसानी से हो जाता है, इसलिए गुप्तरोगों से ग्रसित व्यक्ति में एच.आय.वी. संक्रमण की संभावना अधिक होती है ।

एच.आय.वी. विषाणु का संक्रमण किस माध्यम से नहीं होता है ?

एच.आय.वी. संक्रमण निम्नलिखित माद्यमों से नहीं होता है :

1. हाथ मिलाने से ।
2. एक साथ वैठने से या यात्रा करने से ।
3. खाँसने से या छीकने से, आँसुओं से ।
4. आलिंगन करने से, चुम्बन से ।
5. एच.आय.वी. वाधित व्यक्ति द्वारा उपयोग किए गए तरणताल (swimming pool), तालाव, टेलीफोन या शौचालय का उपयोग करने से ।
6. एच.आय.वी. वाधित व्यक्ति के उपयोग किए गए बर्तन, कप, प्लेट, चादर या उसके पहने हुए कपड़े का इस्तेमाल करने से ।
7. एक साथ खाना खाने से ।
8. मच्छरों या खटमलों के काटने से ।
9. एच.आय.वी. बाधित व्यक्ति की सेवा करने से ।
10. किसी भी प्रकार के अनजाने में हुए सम्पर्क से जैसे बस - ट्रेन में धक्का लगना, पीठ पर हाथ फेरना - थपथपाना आदि ।
11. रक्तदान करने से ।

मुख्य बिंदु

एच.आय.वी. (HIV) : एक विषाणु जो शरीर की रोग प्रतिरोधक शक्ति को कमजोर करता है ।

एड्स (AIDS) : एच.आय.वी. संक्रमण की अंतिम अवस्था, जिसमें शरी[illegible] गंभीर बीमारियों का शिकार हो जाता है ।

इतिहास :

पहली बार 1981 में अमेरिका में यह बीमारी सामने आई।

1983 में डॉ. ल्यूक मॉन्टाग्नियर ने एच.आय.वी. विषाणु की खो[illegible] की ।

भारत में संक्रमण :

पहला मामला 1986 में मद्रास की वेश्याओं में पाया गया।

अब यह देश के कई हिस्सों में फैल चुका है ।

फैलने के प्रमुख कारण :

असुरक्षित यौन संबंध (बिना कंडोम के) ।

संक्रमित रक्त चढ़ाना ।

संक्रमित सुई-इंजेक्शन का प्रयोग ।

गर्भवती संक्रमित महिला से शिशु को संक्रमण ।

फैलने के माध्यम नहीं :

हाथ मिलाना, साथ खाना, खाँसी, छींक, मच्छर काटना, कपड़े[illegible] बर्तन साझा करना आदि ।

लक्षण :

वजन घटना, लगातार बुखार या दस्त, मुँह में छाले, त्वचा [illegible] संक्रमण, थकावट आदि ।

कई सालों तक लक्षण न भी दिखें तो व्यक्ति संक्रमित हो सकता है ।

संक्रमण की प्रक्रिया :

एच.आय.वी. शरीर में सी.डी.-४ कोशिकाओं पर हमला करता है।

धीरे-धीरे रोग प्रतिरोधक क्षमता खत्म हो जाती है ।

रोकथाम के उपाय :

सुरक्षित यौन संबंध ।

स्वच्छ सुई और रक्त का प्रयोग ।

जनजागृति और शिक्षा ।

भ्रांतियाँ :

एच.आय.वी. सामान्य संपर्क से नहीं फैलता ।

रोगियों से डरने की नहीं, सहानुभूति की ज़रूरत है ।

सरकारी प्रयास :

राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण संस्था (NACO) द्वारा जागरूकता अभियान और इलाज की सुविधा ।

शब्दार्थ :

नियंत्रण = काबू रखना

जागरूकता अभियान = किसी खास विषय या समस्या के बारे में लोगों को सही जानकारी देना और उन्हें सजग बनाना

जोखिम = नुकसान, हानि या खतरा

पाठ का सारांश :

प्रस्तुत लेख एच.आय.वी./एड्स एक वैज्ञानिक निबंध है, जिसमें इस लाइलाज बीमारी की व्यापक जानकारी दी गई है। यह रोग 20वीं सदी की सबसे गंभीर स्वास्थ समस्याओं में से एक है, जो भारत सहित पूरे विश्व में तेजी से फैला है। इसकी विशेषता यह है कि यह एक बार शरीर में प्रवेश कर जाए तो इसका स्थायी इलाज संभव नहीं है, इसलिए इसकी जानकारी और रोकथाम ही सबसे बड़ा उपाय है।

एच.आय.वी. (Human Immunodeficiency Virus) एक विषाणु है, जो शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को कमजोर करता है। जब शरीर इतना कमजोर हो जाता है कि सामान्य संक्रमणों से भी नहीं लड़ पाता, तब रोग की अंतिम अवस्था एड्स (Acquired Immunodeficiency Syndrome) कहलाती है। इस रोग की शुरूआत 1981 में अमेरिका में समलैंगिक पुरूषों मे देखे गए असामान्य लक्षणों से हुई। 1983 में फ्रांस के वैज्ञानिक डॉ. ल्यूक मॉन्टाग्नियर और अमेरिका के डॉ. रार्बट गेलो ने एच.आय.वी. विषाणु की खोज की।

भारत में एच.आय.वी. का पहला मामला 1986 में मद्रास में दर्ज हुआ। इसके बाद यह संक्रमण तेजी से फैला और विभिन्न राज्यों में देखा गया। यह मुख्यतः असुरक्षित यौन संबंध, संक्रमित रक्त के चढ़ाव, संक्रमित सुई के उपयोग और संक्रमित माँ से शिशु को हो सकता है। खास बात यह है कि कई वर्षो तक शरीर में इसके कोई लक्षण नहीं दिखाई देते, लेकिन व्यक्ति दूसरों को संक्रमित कर सकता है।

जब शरीर की रोग प्रतिरोधक कोशिकाएँ (सीडी-4) बहुत कम हो जाती हैं, तब एड्स के लक्षण प्रकट होते हैं। इनमें वजन घटना, लगातर बुखार, लंबे समय तक दस्त, मुँह में छाले, त्वचा रोग आदि शामिल हैं। यह भी ज़रूरी है कि व्यक्ति केवल लक्षणों के आधार पर स्वयं को एड्स का रोगी न माने, बल्कि चिकित्सकीय परीक्षण कराए।

यह रोग केवल रक्त, वीर्य, योनि स्राव आदि के संपर्क से फैलता है। यह हाथ मिलाने, साथ खाने, छींकने, मच्छर के काटने या किसी संक्रमित व्यक्ति के कपड़े या बर्तनों से नहीं फैलता। इन भ्रांतियों को दूर करने की आवश्यकता है।

रोग की रोकथाम के लिए जागरूकता, सुरक्षित यौन व्यवहार, स्वच्छ सुई का उपयोग और संक्रमित रक्त से बचाव आवश्यक है। सरकार द्वारा राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण कार्यक्रम चलाया जा रहा है। साथ ही, समाज को रोगियों के साथ सहानुभूति और संवेदनशीलता से पेश आना चाहिए।

संभाव्य प्रश्न :

1. एच.आय.वी./एड्स के इतिहास पर प्रकाश डालिए।
2. एच.आय.वी./एड्स भारत में कब और कैसे फैला है, स्पष्ट कीजिए?
3. एच.आय.वी./एड्स के लक्षणों पर प्रकाश डालिए ?
4. एच.आय.वी./एड्स के विषाणु कैसे फैलते हैं ?